University of Lucknow Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी वर्ष
1920-2020

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

सौ साल की विरासत को आगे बढ़ाएंगे युवा

लखनऊ विश्वविद्यालय का शताब्दी उत्सव : दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने मेधावियों को पदक से किया सम्मानित, युवाओं से आगे आने का किया आह्वान, उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा रहे विशिष्ट अतिथि

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय की साल के द्वार सभी प्रकार किया गया है। इस की शाखों में विश्वविद्यालय ने उच्च परंपराओं और विरासत को सहेजी है। दीक्षांत समारोह उन्मादित होने प्रसार पुष्प अब इस विरासत को आगे बढ़ाने का काम करेंगे। युवाओं को यह संदेश लखनऊ विश्वविद्यालय की कुलपतियों ने राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने शनिवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के 63वें दीक्षांत समारोह में दिया। कोविड-19 की वजह से इस बार दीक्षांत समारोह सीमित लोगों के बीच हुआ और मेधावियों को 15 पदक प्रदान किए गए। बाकी पदक अगले समारोह में प्रदान किए जाएंगे। समारोह में विशेष शिक्षा की योगदान स्वर्ण पदक, रैना शुक्ला को महान भोजपाल गोल्ड मेडल, तेजस्विनी बाजपेई को पद्मश्री गोल्ड मेडल, हर्षिता दुबे को भोजपाल विरासत मेडल, वंदिता शुक्ल, मोहम्मद आमिर, शिवम श्रीवास्तव, आदित्य सिंह, सोनिया गुप्ता, पलक मिश्रा, नमोलि सिंह, भिदिता शुक्ल, मनमान संकल्प तथा अभय द्विवेदी को महाकवि कालिदास पदक प्रदान किया गया।

दीक्षा का अंत नहीं है दीक्षांत : डॉ. दिनेश शर्मा

दीक्षांत समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि शिक्षा का अंत नहीं होता है बल्कि एक नए जीवन का शुरुआत होती है। उन्होंने कहा कि यह समारोह शताब्दी वर्ष में होने की वजह से महत्वपूर्ण है। यहां से 14 पदकों, 4 गोल्डमुक्त और 2 मुख्य विद्वान विद्यार्थियों को पदक के लिए दे दिया गया। वर्ष 1884 को बैरिस्टर कॉलेज के रूप में स्थापित होने के बाद वर्ष 1920 में इसे विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। बहुत से लोगों ने यहां देकर इसको स्थापना की। यहां के स्नातक विद्यार्थी निकले हैं।

दीक्षांत समारोह में शामिल होना गौरव की बात

राज्यपाल ने कहा कि विविध के उच्चतम विद्यार्थियों ने विश्व को पाकशास्त्र किया है। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि उत्तर प्रदेश के इस महान विश्वविद्यालय के उपाधित हूं। आज नवयुवकों के जीवनों विश्वविद्यालय आगे बढ़ रहा है। कार्यक्रमों के माध्यम से विकास हो रहा है। युवाओं को कोरोना महामारी व महिलाएं अपने विकास हो रहा सोलन का मुकाबला करने की जरूरत है। हमें अपने हाथों से मास्क बनाकर लोगों को बांटने की जरूरत है। मुझे भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना होगा। मैं विश्व की बात करूं तो यह हमें गलवान और लद्दाख की ओर ले जाती है।

देश सेवा के लिए सेना में जाना है

मेरे पिता के सपनों को पूरा करने के लिए मैं देश सेवा के लिए आर्मी में जाना चाहती हूं। मेरा पिता अभिनेता विक्रम मोगा आर्मी में थे। मेरा सपना है कि मैं देश की सेवा करूं। - रैना शुक्ला, कुलपति सम्मानित पदक

बच्चों को मिले उपहार

लखनऊ के दीक्षांत समारोह में शामिल होने पर मुझे उपहार मिलना बेहद खुशी की बात है। मेरे पिता सतीश कुमार बाजपेई लखनऊ में अधिवक्ता हैं। मेरे पिता को पढ़ाई करते देखकर मैं भी वकील बनना चाहती हूं। - तेजस्विनी बाजपेई, पदकधारी स्वर्ण पदक

गणित में करना है शोध

लखनऊ विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनना बहुत खास उपलब्धि है। गणित मुझे बचपन से ही पसंद है। इसलिए मैं इसी में आगे शोध कार्य करना चाहती हूं। एमएससी में 95 फीसदी लेकर लोगों को बताना मैं मुझे विशेष खुशी महसूस हो रही है। अपने मेहनत का श्रेय मैं अपने पिता एडवोकेट शैलेंद्र कुमार दुबे और मां लखनऊ दुबे के साथ ही विभाग के सभी शिक्षकों को देना चाहती हूं। - हर्षिता दुबे, कुलपति स्वर्ण पदक

दीक्षा संग मिला राज्यपाल और राष्ट्रपति का आशीर्वाद

दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को कुलपति ने पदक के रूप में दीक्षा दी। इसके साथ उन्हें राज्यपाल के साथ ही राष्ट्रपति राम्नाथ कोविंद का संदेश भी मिला। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने बताया कि आज पूरा राष्ट्रपति का मेरे पास आया था। वह उन्हें पत्र पाया कि मैं शताब्दी वर्ष मना रही लखिनि के दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होने जा रही हूं तो मिल उन्होंने सभी को शुभकामना देने के लिए कहा। राष्ट्रपति ने कहा कि मैं आशा करता हूं कि आप सभी अपने जीवन में उच्च आदर्शों को अपनाकर उन्नत जीवन जीने का प्रयास करेंगे। - मोहन भागवत, निदेशक, सेंटर फॉर कल्चरल रिसर्च

समारोह में 13 पुस्तकों का विमोचन

दीक्षांत समारोह में राज्यपाल, उप मुख्यमंत्री ने 13 पुस्तकों का विमोचन किया गया। इसमें पुस्तकों कुलपति कुमार सुमन की तीन पुस्तकें लखनिस्तानपर्सनिटि पाइनुलाइनुस, बीमारुपुष्टिकरणवाद और लखनऊ यूनिवर्सिटी, महर्षि और यूनिवर्सिटी और लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय की कानपुरी विश्वविद्यालय, अंबेडकर

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष

सदैव श्रेष्ठता की चेष्टा करो

साधारणता के लिए कोई स्थान नहीं : राज्यपाल

एलयू के शताब्दी दीक्षांत समारोह में मेडल मिलते ही खिल उठे मेधावियों के चेहरे

14 मेधावियों को 15 मेडल मालवीय हॉल में प्रदान किए गए

फोटो : कुंदन शर्मा

मानविकी संकायाध्यक्ष में आयोजित 63वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने उपाधियाँ दीं. प्रेरणा शर्मा के साथ छात्र-छात्राएं।

समारोह के दौरान टीचर्स बैंकवॉर्ड की पीयूष बजपाई को उपाधि स्वरूप स्मृतिचिह्न दिया गया।

मानविकी संकायाध्यक्ष में आयोजित 63वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को स्मृति चिह्न भेंट करती कुलपति आलोक कुमार राय।

विश्वकवि समारोह

लखनऊ: शताब्दी स्नातक वर्ष समारोह के बीच आयोजित शताब्दी दीक्षांत समारोह में 14 मेधावी छात्रों ने मेधावियों के बीच दीप से चमक उठे। इस दीप्तिमान मुहूर्त पर मेडल पाने की अपार खुशी उनके चेहरे पर साफ झलक रही थी। उनके इस उल्लेखित पल का सबसे बाद दीप्तिमान मानविकी संकाय। कवीय देव श्री तक पहले दीक्षांत समारोह में विशेष कुलपतिपति और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने मेधावियों को मेडल देने के साथ-साथ चेकअप को सम्मान करने का संदेश देते हुए कहा कि आजीवन केवल की चेष्टा करो, क्योंकि साधारणता के लिए कोई स्थान नहीं है। आपको विश्वास्थान सदैव राष्ट्रीय में हो कि हमें पूरा विश्वास। उन्होंने सभी पहले विदि के सर्वोच्च प्रतम विभाग मिल को कुलपतिपति गोल्ड से नवाजा। आनंदीबेन पटेल ने 14 मेधावियों को 15 मेडल प्रदान किए।

दीक्षांत समारोह की शुरुआत सैक्षिक सोमवार से हुई। यह के मानवीय हाल में भूमिकी की चहल पहल देखने को मिली। इसके बाद मानविकी संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आलोक कुमार राय, प्रकुलपति डॉ. विनय कुमार पाठक, रजिस्ट्रार प्रोफेसर अनिल कुमार राय, कार्यकारी परिषद के सदस्य और सभी संकाय के अधिष्ठाता मौजूद थे। कुलपतिपति ने दीक्षांत समारोह के बारे में बताया कि यह दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार और के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार को और से हार्दिक शुभकामनाएं देते थे। और सभी अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, शिक्षा, चिकित्सा-ज्ञान, आयुर्वेद और कृषकी संकायों के छात्रों को उपाधियां प्रदान की गई। फिर कुलपति 15 मेधावियों को मेडल वितरित किए। और फिर कुलपतिपति के उपाधिदान के बाद राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ।

राष्ट्रपति ने दी शबाशी, लेंगे भी बधाई

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने बताया कि जब वह पहले राज्यपाल से मिलकर रही थी, तो उस समय उन्होंने राज्यपाल महिला का फोन आया। हमने बताया कि विवि जा रही हैं। इस पर उन्होंने कहा कि मेरी ओर से सभी साथियों को बधाई देना।

विवि की 13 पुस्तकों का विमोचन

राज्यपाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय के 13 पुस्तकों का विमोचन किया। जिनमें पंचमी प्रोफेसर कृष्ण शुक्ल की तीन पुस्तकें, प्रोफेसर अजित कुमार्तिकेय की तीन पुस्तकें व विश्वविद्यालय के अन्य विद्वानों की पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। आनंदीबेन ने विश्वविद्यालय द्वारा लिए गिए कार्यों की पुस्तक व उद्धारण दिए, विभिन्न वे राज्यपाल मुख्यमंत्री कल्याण सिंह व संस्थापक, शिवी विश्वेश्वर तथा एक टीकाकार प्रतिभाकार कल्याण उपस्थित किया।

रॉकबैंड और रंगमंच के जमे रंग

इनके बाद रांची के मनाक बैंड कल्याणी ने रॉक और रॉक सांग सुनाकर आनंदित कर दिया। जिसमें अनन्य मिलन, विवेक मिश्रा बंधाश, अभिजाता व गुंजन ने खूब रंग जमाया। इसके बाद वर्धा ने सांगीतिक कार्यक्रमों समापन हलाभी के उपहार नाटक 'अंतरा' की रचनाओं को। जिसमें महिलाओं के शोषण की व्यापक दिखाई। रचनाओं में आहुति, उदासी, मोहरा, सुहागी, अभिशप्त व प्रताप ने अभिनय किया। वहीं अन्य प्रस्तुतों ने समाजिक मान रंगु की पेशकश प्रस्तुतों को मंच किया। जिसमें गीतम, स्वागत के बाद कलाम, विकास, वाशिम, विधि, शिवम, लक्ष्मण-लक्ष्मण, आयुष्मि और पुष्पराज संकायों के छात्रों को उपाधियां प्रदान की गई। फिर पुलिस 15 मेधावियों को मेडल वितरित किए। और फिर कुलपतिपति के समापन के बाद राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ।

आजादी के संघर्ष की दास्तान सुनाकर बांधा समां

नवाबीन राजकलाकारों विभाग कार्यालय ने प्रतिक्रियाकार कारी कार्य में आजादियाँनी का दीपमान बढ़ाने वाले पीवियन मनाकारों की जमाल लखनऊ द्वारा लगाए गए कैंपस आयोजन रहा। सटायर प्रमुख सच्च से महाविद्यालय के लॉट विद्यान विभाग द्वारा कराए गए जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों का कैनेडियनमेंट आज, उस पर विभिन्न कलाकारों ने सांगीत दिया। इस मौके पर उन्होंने आयोजन किया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के लॉट विद्यान विभाग द्वारा कराए गए जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों के साथ किया गया। इसमें कलाकारों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सेदार रहे कलाकार के समान अपने संघर्षों के साथ आजादी प्राप्ति की दास्तां एक बार फिर सुनाकर लोगों को भावुक कर दिया। इस मौके पर कलाकारों ने लोगों के दिलों में देशभक्ति की अलख जला गई। जो कलाकार इस दौरान मौजूद रहे। उन्होंने आयोजन किया गया। जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों का कैनेडियनमेंट आज, उस पर विभिन्न कलाकारों ने सांगीत दिया। इस मौके पर उन्होंने आयोजन किया गया। जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों के साथ किया गया। इसमें कलाकारों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सेदार रहे कलाकार के समान अपने संघर्षों के साथ आजादी प्राप्ति की दास्तां एक बार फिर सुनाकर लोगों को भावुक कर दिया। इस मौके पर कलाकारों ने लोगों के दिलों में देशभक्ति की अलख जला गई। जो कलाकार इस दौरान मौजूद रहे।

विज्ञान मेले में कृषि महाविद्यालय रहा अव्वल

विज्ञान मेले में आज दूसरे दिन वह भाग पुष्प कृषि महाविद्यालय महाविद्यालय कार्यों का जलाल लखनऊ द्वारा लगाए गए कैंपस आयोजन रहा। सटायर प्रमुख सच्च से महाविद्यालय के लॉट विद्यान विभाग द्वारा कराए गए जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों का कैनेडियनमेंट आज, उस पर विभिन्न कलाकारों ने सांगीत दिया। इस मौके पर उन्होंने आयोजन किया गया। जीवंत कॉन्सपाल से लॉटों के साथ किया गया। इसमें कलाकारों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सेदार रहे कलाकार के समान अपने संघर्षों के साथ आजादी प्राप्ति की दास्तां एक बार फिर सुनाकर लोगों को भावुक कर दिया। इस मौके पर कलाकारों ने लोगों के दिलों में देशभक्ति की अलख जला गई। जो कलाकार इस दौरान मौजूद रहे।

तबले की थाप और घुंघरुओं की झंकार गूंजी

'अपने तरीके से डिस्कॉर्ड को जीने का हक'

एक अच्छी जीवन इस दुनिया में एक जाम कई भूमिकाओं निभाती है। लेकिन इतिहास गवाह है कि महिलाएं लगातार संघर्षों करती रही हैं। बहार की दुनिया में वे हर जिम्मेदारी में खरी हैं, घरों पर भी वे ही अपनी अस्मता को बचाने के लिए संघर्ष करती हैं। महिला के इसी संघर्ष को नाटक इस मंच ने दिखाया। नाटकों में दिखाया गया कि अगर उसकी मर्जी नहीं है, तो उसका पति भी उसे हुए नहीं लगाता है। नाटक में जादुई, प्रशांत, नवाब, हिमांशु, हिमेश, अजय, विधि, विश्वास आदि ने नाटकार अभिनय किया।

स्टूडेंट्स ही विरासत को आगे ले जाएंगे : राज्यपाल

पत्रिका संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 63वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि यह अवसर है उन स्टूडेंट्स को बधाई दे। हमारी इच्छा का विकास एलयू कर रहा है। हम वर्ष में एलयू चहुंचा है। 100 साल पुरा करने वाला यह नौवां यूनिवर्सिटी है। अनेक स्टूडेंट्स ने विज्ञान लेकर पास अपनी चमक बिखेरा है, यहां अनेक विद्यापन मिले हैं, यह यूनिवर्सिटी कामयाब रहा, मेरा लिए यह गर्व की बात है। यह कामयाबियां विश्वेष्ठ, कुशल रहती है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी इस कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाएंगे। ने नवाचारों के जरिये यह यूनिवर्सिटी आगे बढ़ रहा है। समाजिक योगदान का भी विकास हो रहा है। हम स्टूडेंट्स को समर्पित कर रहे हैं। यह स्टूडेंट्स ही विरासत को आगे ले जाएंगे। हम स्टूडेंट्स के प्रोफेशनल भाव को संस्कृति को आगे बढ़ाना चाहा।

लखीमपुर के पीजीटी लखनऊ में कुलपतिपति अनंदीबेन पटेल ने उन्हें सम्मानित किया। साथ डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा व अन्य

यहां के छात्र अनेक पद्म पुरस्कार विजेता रहे : डॉ. शर्मा

इस दौरान उप मुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा ने कहा कि लिखा आज नहीं है, ये नया आरम्भ है। यह दीक्षांत समारोह आज ही हो रहा है। यह यूनिवर्सिटी बड़ी पवित्र यह संस्कारों में, हमारे प्रोफेसरों ने यहां से बड़ा मेहनत से पढ़ाया है। यहां, उप मुख्यमंत्री ने पुरानी यादों को ताजा करते हुए कहा कि आपने गंदे दिन भोगे हुए। यह यूनिवर्सिटी के उपकुलपति ने अपने कार्यक्रम में यह बात कही। यहां अंग्रेजी और अर्थशास्त्र दोनों पढ़ा गया है।

100वें वर्ष में मेडल पाकर मेधावियों के चेहरे खिले

पत्रिका संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 63वें दीक्षांत समारोह में शनिवार को 14 मेधावियों को सम्मानित किया गया। मेडल पाकर मेधावियों के चेहरे पर खुशियां साफ झलक रही थी। इस दौरान मेधावियों से हुई बातचीत के मुख्य अंश।

मेहनत और लगन का मिला फल

मैं बीए ऑनर्स कर इस पॉलिटिकल साइंस का स्टूडेंट हूं। मैं जो भी काम करता हूं वो अपनी लगन के साथ करता हूं। जिसका आज फल प्राप्त हुआ है। मैं अपने लोक प्रशासनिक सेवा में जाना चाहता हूं। मैं इस मेडल का श्रेय अपने माता पिता व पॉलिटिकल साइंस विभागाध्यक्ष शशि सुरभा को देना चाहूंगा।

शिवांग मिश्रा, संकाय गोल्डमेडलिस्ट

ऑर्नर्स ऑफिसर बनना चाहती हूं

मैं साइकोलॉजी को पेशेवर लोगों पर। इसलिए मुझे और मेरा माता पिता को पूरा भरोसा है। मैं पढ़ाई में अपना अच्छा प्रदर्शन करूंगी। मेरी मेहनत और माता पिता के सहयोग से मुझे ये मेडल मिला है। मैं बीए लॉ कर रही हूं। मैं चाहती हूं कि मैं एक अच्छी जज बनूं। मेरा माता पिता ने मुझे बहुत सपोर्ट किया है। मैं अपने माता पिता को ही अपना आदर्श मानती हूं।

नेहा गुप्ता, एलएलबी संकाय गोल्ड मेडलिस्ट

जिसके से के साथ लोगों के हक के लिए लड़ूंगी

मैं समाजशास्त्री ऑनर्स की छात्रा हूं। मुझे मेडल पाकर काफी खुशी हो रही है। मैंने यहां सोचा था कि मुझे मेडल मेहनत मिलेगा मैं इसका पूरा श्रेय अपने माता पिता और अपने टीचर्स को देना चाहूंगी। मैं अपने भारतीय प्रशासन में जाना चाहती हूं। इसके बाद मैं दूसरे लोगों के साथ अन्याय होता है उनके लिए मैं एडवोकेट के तरफ से उनको न्याय दिलाने का भी काम करना चाहती हूं।

देवश्री राजोरे, छात्राधीं गोल्ड मेडलिस्ट

मेहनत का फल प्राप्त हुआ

मेरे लगता मैं सबसे अधिक श्रेय अपने माता पिता को मेडल दिला गया है। मेरी लगन और मेहनत का फल आज मुझे प्राप्त हुआ है। मैं पर से पूरा सफलता हासिल की। यूनिवर्सिटी के माननीय सभापाल में आयोजित इस समारोह में कुलपतिपति और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने स्टूडेंट्स को मुझे दो दिवसीय मेडल मिले हैं। पहला बेस्ट ग्रुपिंग स्टूडेंट और यूनिवर्सिटी के लिए और दूसरा पूरी फैकल्टी में सबसे अच्छी स्टूडेंट के लिए। मैंने एमएससी में 95.58 अंक हासिल किए हैं। मैं इस मेडल का श्रेय अपने परिवार व फैकल्टी के टीचर्स को देना चाहूंगी। मैं आगे चलकर प्रोफेसर बनना चाहती हूं। मेरा पिता सीनियर ट्रेड्स में काम करते हैं और माता सहायक प्रवक्ता हैं।

हर्षिता दुबे, बीएससी विज्ञान मेडल

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के तीसरे दिन दीक्षान्त समारोह में विवि के कुलाधिपति व राज्यपाल आनंदी बेन पटेल बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल रही जिन्होंने शिवांश को चांसलर पदक से सम्मानित किया।

कुमकुम धर के कथक ने समां बांधा

पत्रिका संवाददाता (vol)

लखनऊ। शुक्रवार को दिवा सेशन में जब लखनऊ की आर और शुक्रवार को इन्कार गुंजाई है तो सबका मन खुश नाच उठता है। ऐसा ही कुछ हमारा आज शाम विद्यमान लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में जहां लखनऊ की विश्वविख्यात कथक नृत्यांगना कुमकुम धर ने अपने ऊर्जावान कथक की प्रस्तुतियों से लोगों के हृदय के तारों को झंकृत कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय, उप्र प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री स्वाति सिंह एवं प्रोफेसर गिरिश चंद्रिका ने द्वीप प्रज्वलन कर की। कुमकुमधर ने अपने कार्यक्रम की प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस मौके पर राज्य मंत्री स्वाति सिंह ने छात्रों को आजादी भाषण के प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आजादी के साथ-साथ हमें यह याद करने की और जोर दिया। इस मौके पर लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने सबसे आवाजों में सामंजस्य बिठाने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम के पहले विश्वविद्यालय की प्रथम महिला कुलपति आलोक कुमार राय की धर्मपत्नी का सम्मान विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा निर्मित चित्र देकर सम्मानित किया।

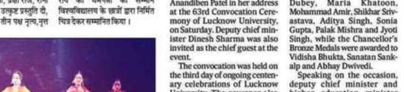

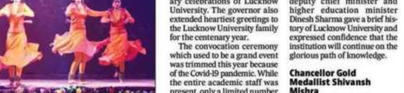

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह में लखनऊ की प्रसिद्ध नृत्यांगना कुमकुम धर

[LU CENTENARY YEAR CONVOCATION]

Guv exhorts students to strive for betterment of society, nation

At pandemic peak, Patel greets varsity family on reaching milestone; V-C highlights LU achievements

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

LUCKNOW: "Students must strive for their own betterment, that of the society they live in and their nation," said governor Anandiben Patel in her address at the 63rd Convocation Ceremony of Lucknow University, on Saturday. Deputy chief minister Dinesh Sharma was also invited as the chief guest at the event.

The convocation was held on the third day of ongoing centenary celebrations of Lucknow University. The governor also extended heartiest greetings to the Lucknow University family for the centenary year.

The convocation ceremony which used to be a grand event was trimmed this year because of the Covid-19 pandemic. While the entire academic staff was present, only a limited number of students were invited, and medals too, were also awarded only to 15 students.

The convocation began with the academic procession. The national song was sung at the beginning followed by the Kulgeet of Lucknow University. Vice-chancellor Alok Kumar Rai welcomed all the guests by greeting the chancellor on behalf of the university and listed the achievements of Lucknow University.

He said that working on the lines of making a self-reliant India, the Lucknow University developed its own hand-sanitiser named LUCHEM and a decoction (Karah) called LURAM-19. The trademark and registration of online learning application SLATE (strategic learning application for transformative education) was also done. Lucknow University also launched EASE (electronic access to the services of examination) portal and SIMS (student instant messaging service) portal for easy connectivity with teachers.

This was followed by the distribution of degrees. The Chancellor's Gold Medal went to Shivansh Mishra, Vice-Chancellor's Gold Medal to Hariya Shukla and the Chakravarti Gold Medal to Tejaswini Bajpai. The Chancellor's Silver Medals were awarded to Harshita Dubey, Maria Khatoon, Mohammad Amir, Shikhar Srivastava, Aditya Singh, Sonia Gupta, Palak Mishra and Jyoti Singh, while the Chancellor's Bronze Medals were awarded to Vidisha Bhukta, Sanatan Sankar and Abhay Dwivedi.

Speaking on the occasion, deputy chief minister and higher education minister Dinesh Sharma gave a brief history of Lucknow University and expressed confidence that the institution will continue on the glorious path of knowledge.

Chancellor Gold Medallist Shivansh Mishra

The Chancellor's Gold Medal is awarded to the overall best student. Shivansh who completed BA (hons) in Political Science excelled in academics and other curricular activities. The eldest son of a government employee and a housewife, he is preparing to take the civil services exam. He dedicated his success to his parents, head of the department and seniors.

Vice-Chancellor Gold Medal to Raina Shukla

The medal is awarded to the best NCC cadet. Raina wants to serve the nation by joining the defence forces. Her father is in a private job while her mother is a housewife. A school trip to border area in Jammu and Kashmir motivated her to join the defence forces.

Art Gallery, Happy Thinking Lab inaugurated

During the convocation, vice-chancellor Alok Kumar Rai announced that Governor Anandiben Patel has come to the University as the chief guest on her birthday. The update was followed by a round of applause from people gathered in the Malviya Hall. A student also sang a song for the governor wishing her on the occasion.

Governor Anandiben Patel awarding certificate to a student. DEEPAK GUPTA/HT

Kathak dancer Kumkum Dhar performed at Lucknow University in the ongoing centenary celebrations on Saturday. An alumni of LU, she was former vice chancellor, dean and head of dance department at Bhatkhande Music Deemed University, Lucknow HT

Shivansh Mishra was awarded Chancellor's Gold Medal. HT

Street play being staged in Lucknow University. DEEPAK GUPTA/HT

STREET PLAY AT LU HIGHLIGHTS PLIGHT OF WOMEN

LUCKNOW: In an apparent expression of concern towards the cause of justice for women, students of Lucknow University highlighted the travails of a girl child and her life through their street play, 'Hau Hai Hamara'.. Staged near gate number 4 of the century old university, the play mainly dealt with suppressed voices of women from the time of their birth to school and college days, as well as early and arranged marriages. Anshul Bharty, a student, said, "It is a proud moment to be a part of the university when it is celebrating its 100 years.

"I appeared in B Sc entrance test. But failed. Got admission at Shia PG College. To be invited by Lucknow University at the centennial celebrations is a proud moment. Glad that the university invited me for the occasion. I have several fond memories of my student life. There are very few universities in the country that are 100 years old. Happy to be here today," he said.

Briefing the audience on his

Himanshu Bajpai. DHEERAJ DHANWANI/HT

Young city dastango fires younger hearts with 'unity in diversity'

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

LUCKNOW: Fresh from his virtual performance for audiences at Harvard University recently, Lucknow's dastango (story teller) Himanshu Bajpai won the hearts of students and academicians of Lucknow University, with his 45-minute presentation 'Dastan-e-Tamanna-e-Sarfarosh', on Saturday.

Bajpai's performance was part of the ongoing centenary celebrations of the university and was based on the Kakori incident (of August 9, 1925, during the Indian Independence Movement). He brought to life the beliefs, courage and the struggles of the revolutionaries by focusing primarily on the courageous act of Ashfaqulla Khan, Ram Prasad Bismil and others.

Bajpai was able to easily connect with the audience of Lucknow as he himself studied at Shia PG College (2004-2007) from where he graduated in Science.

"It appeared in B Sc entrance test. But failed. Got admission at Shia PG College. To be invited by Lucknow University at the centennial celebrations is a proud moment. Glad that the university invited me for the occasion. I have several fond memories of my student life. There are very few universities in the country that are 100 years old. Happy to be here today," he said.

Briefing the audience on his presentation, Bajpai said, "Although these revolutionaries came a generation before Bhagat Singh but not much has been done to keep their story alive." The Kakori Episode was the brainchild of Khan and Bismil. Their friendship was deep-rooted and is a great example of Hindu-Muslim unity in India.

Together they had dreamt of a free India, where everyone was treated equally and no one was discriminated on the basis of caste or religion, he said amid thunderous applause from the audience.

Talking about storytelling as an art-form and its relevance in today's digital world, Bajpai said, "This art form has lived through many centuries and changes yet its 'asar' (effect) is manifold. It reminds people of the time when 'sunna' and 'kehna' (storytelling) was very basic. Writing and reading came much later, yet dastangoi had the biggest influence. I don't think the digital world will ever be a challenge."

The presentation was passionately written and narrated by Bajpai and woven together with the poetry by Ashfaq and others.

Bajpai has won accolades from President Ram Nath Kovind after presenting this Dastan at the Rashtrapati Bhawan on the occasion of Rashtrapati Bhavan Diwas. Moreover, he earned much appreciation for his work at Kala Utsavam Festival, Singapore.

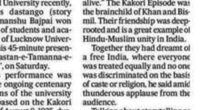

महिलाओं का वर्चस्व बरकरार हर्षिता को मिला सर्वश्रेष्ठ पदक

सतीश संगम

लखनऊ। 19वीं सदी में महिलाओं के प्रति शिक्षा की अलख जगाने वाली देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फूले की महिमा का असर अब दिखने लगा है। यही वजह है कि हर क्षेत्र में न केवल महिलाओं की भागीदारी बल्कि अपनी लगन से परिवार,देश व समाज का नाम रोशन कर रही हैं और बुलंदियों को छु रही हैं। उदाहरण के तौर पर लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्रा हर्षिता दुबे को देखा जा सकता है। विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 2020 की प्रथम छात्रा बनी जिन्होंने पीजी कोर्स में विवि के साथ-साथ महिलाओं में प्रथम स्थान मिलने पर सर्वश्रेष्ठ पदक हासिल किया। विवि के मैथमेटिक्स विभाग के पीजी कोर्स से रही हर्षिता का नाम आज के उन 14 मेधावियों में शामिल रहा जिन्हें राज्यपाल द्वारा पदक दिया गया। यहीं नहीं आज जिन 14 मेधावियों को पदक दिया गया है। इनमें आठ महिलाएं शामिल है। इसमें हर्षिका के अलावा रैना, तेजस्विनी, मारिया, सोनिया, पलक, ज्योति व बिदिशा का नाम शामिल रहा। जिला सुल्तानपुर की रहने वाली हर्षिता से जब इस संबंध में बात की गई तो उन्होनें बताया कि राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के हाथों मुझे दो चांसलर सिल्वर पदक मिला है। जिनमें पहला पदक विवि में उच्च स्थान पाने पर और दूसरा महिलाओं में उच्च स्थान पाने पर दिया गया। उन्होनें कहा कि सुल्तानपुर के जिस क्षेत्र से मैं आती हूं वहां भी इससे पहले किसी महिला को ये पदक नहीं मिला है। ऐसे में इससे बड़ी खुशी मेरे लिए क्या हो सकती है। उन्होंने अपने कैरियर पर बात करते हुए कहा कि मेरा सपना है कि आगे जाकर प्रोफेसर बनूं। सिविल क्षेत्र में भी जाने का सपना है। जिसके लिए प्रयास जारी है।

महज 20 साल की उम्र में शिवांश ने हासिल किया चांसलर गोल्ड मेडल

लखनऊ (स्वरूप संवाददाता)। विधानसभा के पटल कार्यालय के सेक्शन अफसर पर तैनात अखिलेश मिश्रा के 20 वर्षीय पुत्र शिवांश मिश्रा ने चांसलर गोल्ड मेडल हासिल कर नाम रोशन किया है। बात दें लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के तीसरे दिन दीक्षान्त समारोह में विवि के कुलाधिपति व राज्यपाल आनंदी बेन पटेल बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल रही जिन्होंने शिवांश को चांसलर पदक से सम्मानित किया।

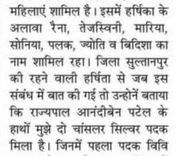

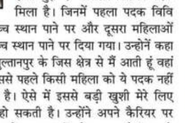

Vibrant hues of Indian art on display at LU

Art Gallery Conceived In 1935 Opens

MohitaTewari@timesgroup.com

Lucknow: A priceless collection of paintings by renowned artists, including three close associates of Rabindranath Tagore's family – Nandlal Bose, Asit Kumar Haldar and Sudhir Ranjan Khastgir – are now a part of the Radha Kamal Mukherjee Art gallery and Museum at Tagore Library of the Lucknow University.

The gallery, inaugurated by Governor Anandiben Patel during LU's centenary celebrations on Saturday, has 451 rare paintings and sculptures.

These artefacts were lying packed in the second floor of Tagore Library since long. Recently, the university got them restored through INTACH.

According to deputy librarian of Tagore Library, Jyoti Mishra, the idea to have an art museum in the library was conceptualised in 1935 when a collection of paintings of various artists was donated by DN Bonerjee, a Gorakhpur based barrister. Since then, the collection of artefacts increased and was put on display on several occasions, but the original idea of having a museum has now materialised after about 85 years.

The museum has been named after Radha Kamal Mukherjee, a professor of economics and sociology, who also later served as the vice-chancellor of Lucknow University. He was also the head of the library for some time.

The museum houses art works of eminent artists like Nandlal Bose – who designed the Emblem of India and beautified the original manuscript of the Indian Constitution – besides Asit Kumar Haldar and Sudhir Ranjan Khastgir. Mishra said the collection includes masterpieces created nearly a century ago, including Haldar's painting of emperor Akbar discussing the plan of Fatehpur Sikri, and Khastgir's painting of a young lady with her shadow. Haldar and Khastgir also served as principal of LU's College of Art and Craft.

One of the major artists of the Bengal renaissance, Haldar (1890-1964) was an assistant of Rabindranath Tagore at Shantiniketan. He served as a principal of Arts College for 25 years from 1925 to 1945. Khastgir (1907-1974) was a master of Bengal School of Art. A pupil of Abanindranath Tagore and Nandlal Bose, Khastgir graduated from Visva Bharati University, Shantiniketan, in 1929. He served as the principal of Arts College from 1956 to 1962.

LU vice-chancellor Prof AK Rai at the new art gallery at Tagore Library

Happy Thinking Lab

Governor Anandiben Patel also inaugurated 'Happy Thinking Laboratory' at ONGC building to help students handle stress, convert negative thinking into positive and lead an enthusiastic life. Workshops, motivational speeches, spiritual games and practices like prayers, meditation and reading of motivational stories will be held at the lab to keep students away from stress.

Replica of Sarnath Buddha statue adorns Tagore Library

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: Nearly a century-old giant terracotta statue of the Buddha, especially modelled by the Arts College in 1931 after the famous Sarnath Buddha, has been placed in the heart of Tagore library.

The statue was made for an exhibition at the India House, London, to represent the United Provinces handicraft at the foreign land but unfortunately it could not be a part of the exhibition as no shipping agent accepted the insurance risk against damage during transit.

"Lucknow was famous for its terracotta work and the students and teachers of the Arts College used to model excellent statues in terracotta. In those times, the masterpieces of the Indian artists were exhibited at India House in London," said former principal of the Arts College Prof JK Agarwal.

It is difficult to say as to who made the statue as teachers made art pieces with the support of students and the credit was taken by teachers who considered it teamwork and didn't engrave their initials on the statue.

The Buddha statue was kept at Arts College and was later shifted to Tagore library for restoration.

The replica of Buddha statue has been installed at Tagore library

TODAY AT LU

EVENT	VENUE	TIME
Centennial walk	From LU to Raj Bhavan	6.30am
Yoga camp	Open-air theatre, Arts College	7.30am
Tree plantation	LU campus	8.30am
Heritage walk	LU campus	9.30am
Museum visit	LU campus	11am
Art & science festival	LU campus	11am
Interface with Anupam Kher	Malviya Hall	2.30pm
Paansa directed by Salim Arif	Arts Quadrangle	5.30pm

Surprise wishes from Prez sweeten LU celebrations

Kakori case 'dastaan' woven with thread of love & secularism

Himanshu Bajpai presenting Dastangoi session at LU

Vedanta Agarwal | TNN

Lucknow: The inspiring story of Kakori action martyrs came alive once again during the gripping Dastangoi (storytelling) session by LU alumnus and famous 'dastango' Himanshu Bajpai as part of the Lucknow University centenary celebrations, on Saturday.

Bajpai, a modern 'dastango' known for his medieval art of oral storytelling, started his performance with anecdotes from his experiences on LU campus. Bajpai said he was proud to be a former student of the university and added that returning to the campus was a unique feeling for him.

Before starting the session titled 'Dastan-e Tamanna-e Sarfarosh', he recited a couplet by poet Ahmed Faraz saying that even if a single individual fully comprehends the essence of his 'Dastaan' (story), the purpose of storytelling would be fulfilled.

The session left the audience brimming with the feeling of patriotism. Bajpai beautifully passed on the underlying message of secularism to the audience by narrating the affection and close relationship that Ashfaqullah Khan and Ram Prasad Bismil shared.

The account was filled with touching elements from the lives of the two freedom-fighters like how they would eat from the same plate and defend their relationship which were beyond religion.

On a more poignant note, Bajpai spoke about the tragic deaths of the parents of the revolutionaries drawing a standing ovation from the audience.

Guv Awards Medals To Students

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: It was a pleasant surprise for the students and faculty members of the Lucknow University when President Ram Nath Kovind's best wishes on its centenary celebrations were conveyed to them during the 63rd convocation ceremony on Saturday.

Governor Anandiben Patel, who is also the chancellor of all state universities, told students and teachers in her convocation address that the President has congratulated LU on completing 100 years and has conveyed his best wishes.

"The moment I left Raj Bhawan to come here for the convocation, I received a